

रामकुमार वर्मा की कला यात्रा के प्रेरणा स्रोत

Saroj^{1*} Prof. Rashmi Joshi²

¹ Research Scholar, Fine Arts, Raja Mansingh Tomar Music & Arts University, Gwalior

² HOD, Painting, S.N. Govt. Girls PG College, Shivaji Nagar, Bhopal

सारांश – वर्मा जी के कला मिज़ाज के निर्माण में उनका पारिवारिक परिवेश तो जिम्मेदार है ही, युग-परिवेश की भूमिका भी कम नहीं है। वर्मा जी ने जिस युग में कला के क्षेत्र में पदार्पण किया उस युग में नवजागरण की लहर से सम्पूर्ण भारत उद्वेलित था। धार्मिक एवं सामाजिक विषमताओं, गलित रूचि, कुप्रथाओं तथा संकीर्णताओं के विरुद्ध अनेक धार्मिक संस्थाएँ सक्रिय थीं। राजनीति के पटल पर गाँधी जी की मूल्यवादी राजनीति और समाजनीति का वर्चस्व था। अंग्रेज़ी सत्ता से मुक्ति के लिए देशव्यापी आंदोलन छिड़ा हुआ था। युग को आंदोलित करने वाले अनेक विचारों, मान्यताओं और आदर्शों को वर्मा जी ने आत्मसात् किया। वर्मा जी ने स्वयं स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। अपने समय के अन्य रचनाकारों के समान ही वर्मा जी के साहित्य में सत्य, अहिंसा, हिन्दू-मुस्लिम एकता, अछूतोंद्वारा, विधवा विवाह, त्याग, विश्व-प्रेम और मानव प्रेम, आस्था विश्वास आदि भावनाएँ प्रस्फुटित होती रही हैं।

-----X-----

1. परिचय:

एक कलाकार का अस्तित्व उसके बड़े जीवन का मूक संवाद है। जिसमें नाराजगी की गूँज सुनाई देती है, कभी कड़ी मेहनत की छवियाँ दिखाई जाती हैं, कभी संघर्षों के निशान उनकी तूलिका का प्रेरक बिंदु बन जाते हैं जिसके द्वारा वह कलाकृति में अपना व्याकरण रचता है। कलाकृति के व्याकरण को लिखते समय की संवेदनाओं और कला की परंपराओं को जोड़ते हुए कलाकृति में प्रवेश करना होता है। इसकी रचना कर बसना होगा। फिर, कहीं न कहीं, एक उत्कृष्ट कलाकृति दर्शक को संवाद करने के लिए प्रकट होता है। यही वजह है कि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनके व्यक्तित्व की छाया किसी कलाकार के अस्तित्व में झलकती है। किसी भी कलाकार को समझने के लिए उसके द्वारा चित्रित कलाकृति का अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। उस रचना का समग्र अध्ययन कलाकार की कलाकृति का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होता है क्योंकि प्रत्येक कलाकार अपने सुख और दुख के क्षणों को एक धागे में बांधकर प्रस्तुत करता है। यानी उस काम के जरिए कलाकार का व्यक्तित्व सामने आ जाता है। इसलिए किसी भी कलाकार को समझने के लिए जरूरी है कि उसके जीवन गति की परिस्थितियों और उन परिस्थितियों का उसके अस्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का अच्छा अध्ययन किया जाए तभी वह अपने हक की गहराइयों तक पहुंच सके। ताकि सहजता के

धरातल पर उसकी रचनात्मक दुनिया की बुनियादी चिंताओं को समझा जा सके।

जितने महान स्कॉलर, मनीषी, कलाकार, साहित्यकार और वैज्ञानिक आदि हैं, उनके पीछे एक घटक है कि प्रारंभिक जीवन से लेकर लक्ष्य तक सभी व्यक्तियों की उत्कृष्टता एक ज्ञात और अज्ञातरूप में है, जो प्रेरणा का रूप ले लेती है, किसी व्यक्ति विशेष को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल बनाती है। स्वदेशी और विदेशी सम्मान से सम्मानित समकालीन भारतीय कला का गौरव रामकुमार की कला की प्रेरणा के मूल स्वरूप में काम करता है। शिमला का प्राकृतिक सौंदर्य बचपन से वर्तमान तक अचेत रूप में रामकुमार की कला निर्माण की प्रेरणा घटकों में से एक है। रामकुमार के माता-पिता की भूमिका को उत्प्रेरक घटक के रूप में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। माता-पिता ही बच्चे के बेदाग मन में संस्कारों का प्रदर्शन करते हैं।

2. कला यात्रा का प्रारंभ

शुरु में रामकुमार के कार्य में आत्मा के लिए बेचेनी तो थी, लेकिन कहीं भी पेंटिंग के लिए जगह नहीं थी। लेखन कार्य सार्वभौमिक था। बचपन से लेकर जवानी तक रामकुमार के मन में कहीं भी आकांक्षा नहीं थी कि चित्रकला के माध्यम से

कुछ मौलिक बनाएं। रामकुमार खुद कहते थे, मैं उन दिनों (बचपन में) पेंटिंग की दुनिया नहीं जानता था।

पेंटिंग की दुनिया में रामकुमार की एंट्री एक घटना है। रामकुमार के शब्दों में, हम दिल्ली आए थे, मैंने अर्थशास्त्र पढ़ना शुरू किया, प्रीवियस में था, फिर, हम दिल्ली में गोल डाकखाना के पास रहते थे। एक शाम मैं घूमता था जिला - जहां पहले काफी मकान था। शारदा उकिल स्कूल ऑफ आर्ट का बोर्ड घर के ऊपर नजर आया। उन्हीं दिनों स्कूल में प्रदर्शनी लगी थी। शायद मैं अंदर चला गया, देखा, एक गहरी तस्वीरें बनाने की इच्छा को देखा। मैंने पूछा, क्या उन्हें यहां प्रवेश मिल सकता है जिन्होंने पहले कहीं नहीं सीखा है, हां। मुझे संध्या कक्षाओं में भर्ती कराया गया, क्योंकि दिन में मैं विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र पढ़ता था, उन्हीं दिनों या बाद में आयोजित यामिनी राय के चित्रों की प्रदर्शनी को याद करता था। शारदा उकील के आर्ट स्कूल द्वारा कला जगत से पहला साक्षात्कार रामकुमार के जीवन में एक महत्वपूर्ण प्रेरक घटना थी, जिसने रामकुमार की पूरी जीवन धारा को बदल दिया। जब रामकुमार ने शारदा उकेल स्कूल ऑफ आर्ट में प्रवेश किया तो शालोज मुखर्जी कला सिखाया करते थे। शालोज मुखर्जी पहले ऐसे व्यक्ति थे, जो रामकुमार को कला के लिए सीधे प्रेरित करते थे। शालोज मुखर्जी के कलाध्यापन के संदर्भ में रामकुमार कहते हैं, उन्होंने उनके साथ चित्र बनाना शुरू किया, पूरी छूट थी, मैं इसे बनाना चाहूंगा, दूसरीओर शालोज से एक डर था, जहां बहुत प्रेरणा थी, क्योंकि एक गुरु के रूप में कला सिखाना उनके बस की बात नहीं थी।

1946 में ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स सोसायटी द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में भी रामकुमार के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य किया। रामकुमार के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रदर्शनी थी जिसने रामकुमार को आधुनिक कला की दिशा दी और प्रोत्साहन का काम किया। इसी प्रदर्शनी ने रामकुमार की प्रबल इच्छा को अपने मन में अपने कुछ मूल कार्य करने की जागृत किया।

3. प्रमुख प्रभाव

कला शिक्षक शालोज मुखर्जी के बाद दूसरे कला गुरु की कला ने रामकुमार को चित्रकला के लिए प्रेरित किया, मुख्य फरनाद है। रामकुमार कला शिक्षा के लिए पेरिस गए और फरनाद लेज की अध्यक्षता में कला शिक्षा ली। रामकुमार के साथ आत्मीय संबंध नहीं बन पाए थे, लेकिन तत्कालीनपरिवेश में अपने अन्य समकालीनों से अलग रहे लेज की कला ने रामकुमार को मूल दत्तक ग्रहण का आविष्कार करने के लिए प्रेरित किया। आगे

इस संदर्भ में रामकुमार कहते हैं, 'वह घर के स्कूल में जरूर पढ़े थे, लेकिन लोगों से आत्मीय संपर्क रखना संभव नहीं था। यह सही है कि शुरुआत में लेवी के साथ पूरा न्याय नहीं हुआ। कलाकारों कोपिकासो, मैटिस, ब्रैक आदि पर ध्यान दिया गया। उन्होंने मशीन के रूपों को कला में बदल दिया। उनकी लाइनें अलग थीं। उस आदमी की नजर मशीन के सामने के हिस्सों पर पड़ी। कुल मिलाकर लेवी की कला अलग-अलग थी, नवीनता की खोज।

लेव के बाद पिकासो और ब्रेक की स्लेज, मैटिस की स्त्री आकृतियां आदि विदेशी कला के लिए प्रेरणा के अन्य स्रोत बन गए। कलाकारों और विदेशी प्राकृतिकसौंदर्य की प्रेरणा कभी रामकुमार की पेंटिंग के माध्यम में तो कभी परोक्ष रूप से उनके अचेतन मन में। विदेशी कलाकार एल0 ग्रीको का भी रामकुमार को काफी उत्प्रेरक रहा है। रामकुमार कहते हैं, एल0 ग्रीको का काम मेरे लिए एक चीज रही है। अपनी कृतियों के लैम्बटोटर चेहरे और कितना अद्भुत (नफरत रामकुमार ने कहा था) आकाश एक मामले में कलाकार और आदमी की समस्या है। कुछ कलाकारों का काम दुनिया में अपने आयनों को रखने के लिए कुछ कलाकारों का काम संभवतः उन्हें व्यक्त करने के लिए लगता है कि उन्होंने इस समस्या को कितनी अच्छी तरह हल किया - साथ ही, यह जानने के लिए कि इसे कैसे हल किया जाए। उसे बार-बार सोचने का मन करता है।

रामकुमार पेरिस में दो सामाजिक चित्रकारों- रोल्ट और कैथे कोलविज, मैक्सिकन चित्रकार पोर्वियानरी और दो अमेरिकी चित्रकारों एडवर्ड हून और बेन शॉन के संपर्क में आए। पूर्व महान कलाकार मासियो और ब्रिटिश प्रकृतिवादी रेम्ब्रांट भी उनके फैन थे। दरअसल, ये कलाकार न केवल चित्रकार थे बल्कि बौद्धिकता के गुणों से भी भरे हुए थे। ये लोग कम्युनिस्ट और सामाजिक समस्याओं को उजागर करते थे। इन कलाकारों के लिए प्रेरणा के रूप में रामकुमार ने उन शीर्षकों के आधार पर एक तस्वीर बनाई, जिसने अपनी कला में राजनीतिक प्रभाव उठाया। रामकुमार की राजनीतिक प्रवृत्ति कैदी के सपने, मजदूर की मौत, भूख और शानियट के कबूतर आदि का ज्ञान है।

विदेश प्रवास के दौरान रामकुमार कवियों से प्रेरित होकर उनके काव्य भावों को अपने चित्रों में ढालना चाहते थे। 1953-59 की अवधि में वह अक्सर अपने अधिकांश चित्रों में पॉल एलूर की कविता से प्रेरित होकर अपने भावों को उतार लेते हैं। रामकुमार ने इलियट की कविता को भी प्रेरित किया और उनकी पेंटिंग्स बनाई। वड्सवर्थ की काव्य पंक्तियों से

प्रेरित होकर रामकुमार अपने दृश्य चित्रों में अपने भाव व्यक्त करते हैं। इलियट और वड्सवर्थ की काव्य प्रेरणा के परिणामस्वरूप, रामकुमार दृश्य चित्रों में अपने स्वयं के भावों का आधार रहे हैं, ज्यादातर 1965 से पहले।

पेरिस में रामकुमार एक अन्य कम्युनिस्ट चित्रकार रेको गुटसो के भी काफी प्रशंसक रहे हैं। वह उसकी मुलाकात अपने साथी दोस्तों के घर पर हुई थी। गुटो मूल रूप से एक सिद्धांतवादी कलाकार थे। वह घनवाद और अभिव्यक्तिवाद को आपस में जोड़कर अपने चित्रों की प्रकृति का निर्धारण करते थे। गुटसोथा की विचारधारा जो भी प्रगतिशील और विकसित हो, जिसे समाज में मुखर रूप में कहा जा सकता है, जो कुछ विशिष्ट, अधिक आधुनिक और मानवीय है, मैं उसे चित्रित करता हूँ। गुटसो की विचारधारा से प्रेरित होकर रामकुमार ने अपने शुरुआती चित्रोन्मुखी चित्रों में से अधिकांश में मानवीय करुणा की तस्वीर बनाई।

भारत का प्राकृतिक नैसर्गिक सौंदर्य रामकुमार को वर्तमान के लिए नए रूपों, आयामों के साथ उत्प्रेरित कर रहा है। बनारस, लद्दाख, लेह, कश्मीर, संजौली, राजस्थान, डलहौजी और दिल्ली के दृश्य चित्रण को उन घटकों में शामिल किया गया है, जो समय-समय पर नई खोज करने, तकनीकों का आविष्कार करने और अपनी कला में नई खोज करने के लिए प्रेरित करते रहे हैं। रामकुमार कला के लिए प्रेरित करने के लिए आज तक हर दिन दिल्ली के अपेक्षाकृत खुले क्षेत्रों का दौरा करने जाते हैं। इस संदर्भ में खुद रामकुमार कहते हैं, दिन के किसी भी समय, किसी भी इलाके में बिना किसी समय, बिना किसी उद्देश्य के, कई बातें स्पष्ट प्रतीत होती हैं। नई स्थितियां, नई समस्याएं भी मन में उभरकर सामने आती हैं। यह स्टूडियो के भीतर काम करने के रूप में मेरे लिए के रूप में महत्वपूर्ण है।

भारतीय कलाकारों में, एस. एच. रजा सबसे अधिक कला के लिए रामकुमार को प्रेरित करने वाले प्रमुख कलाकार हैं। मुल्कराज आनंद ने भी रामकुमार को साहित्य और कला दोनों के लिए प्रेरित किया। मुल्कराज आनंद रामकुमार से बहुत वरिष्ठ लेखक, कला समीक्षक थे, जिन्होंने मार्ग नामक पत्रिका का संपादन करते हुए इस पत्रिका के माध्यम से कई कला लेखों के माध्यम से रामकुमार की कला को पहचाना। पर्याप्त प्रोत्साहन भी कलाकार को प्रेरणा का रूप लेते हुए अपने लक्ष्यों में सक्षम बनाता है। रामकुमार के संदर्भ में यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि उन्हें भारत सरकार, प्रमुख व्यक्तियों, ललित कला अकादमी और राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय द्वारा समय-समय पर पुरस्कार और सम्मान दिया जाता था। इन प्रदर्शनियों में उनकी पेंटिंग्स को न सिर्फ सराहा गया बल्कि ऊंचे

दामों पर तस्वीरें भी खरीदीं। इन कला मूल्यों ने उन्हें कला के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित किया।

4. उपसंहार

इस प्रकार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरक घटकों ने रामकुमार को आज उन ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। जहां तक आम मानव जीवन तक पहुंचने के लिए संघर्ष करता है, यह केवल जारी है। रामकुमार की उत्कृष्टता में उन सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष व्यक्तियों के प्रयास शामिल हैं, जिन्होंने समय-समय पर अपनी कला को लगातार आगे बढ़ाने का प्रयास किया है।

संदर्भ

डॉ. रामकुमार वर्मा की जन्मशताब्दी (हिन्दी)
(एच.टी.एल.एल.) बीबीसी हिन्दी, अभिगमन तिथि:
31 मार्च, 2011

डॉ. रामकुमार वर्मा (हिन्दी) (एच.टी.एम.एल.) एक शाम मेरे
नाम, अभिगमन तिथि: 2 अप्रैल, 2011

शर्मा, कुमुद, हिंदी एकांकी के जन्मदाता डॉ. रामकुमार वर्मा
(हिंदी) अभिव्यक्ति, अभिगमन तिथि: 9 सितम्बर,
2013।

कौशिक, रत्ना, डॉ रामकुमार वर्मा की जन्मशताब्दी (हिंदी)
बीबीसी हिंदी, अभिगमन तिथि: 9 सितम्बर,
2013।

Corresponding Author

Saroj*

Research Scholar, Fine Arts, Raja Mansingh
Tomar Music & Arts University, Gwalior